संस्तुतिपत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर ।
दिनांक : 27/12/1997 ।

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

डॉ. व्ही. के. घाटे
एम्. ए. पीएच्. डी.
प्राचार्य एवं सचिव,
रयत शिक्षा संस्था, सतारा ।

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री दगडू अर्जुन जगताप ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. [हिन्दी] उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध " उपेन्द्रनाथ अश्क के 'निमिषा' उपन्यास का अनुशीलन " मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक परिश्रम के साथ पूरा किया है। इसमें प्रस्तुत विचार एवं विवेचन मेरी जानकारी में मौलिक हैं। प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में पूरी तरह से सन्तुष्ट हूँ।

[शोध निर्देशक]
डॉ. व्ही. के. घाटे ।

सतारा ।
दिनांक : 32/12/1997 ।

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. के लघु शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर ।
दिनांक : 27/12/1997 ।

[श्री दगडू अर्जुन जगताप]
शोध छात्र

प्राक्कथन

उपेन्द्रनाथ अश्क जी गद्यात्मक और पद्यात्मक साहित्य विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी साहित्यकार हैं। उन्होंने उर्दू कविता से लेखन आरंभ किया। साहित्य सम्राट प्रेमचंद जी के प्रोत्साहन से हिन्दी लेखन का आरंभ कर दिया। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, आलोचना, संपादन आदि साहित्य विधा का सृजन कर आधुनिक युग में अपना अक्षय कीर्तिमान स्थापित कर दिया। साथ ही साथ उनके वैचारिक पक्ष का द्योतन करानेवाली भी अनेक स्फुट रचनाएँ उपलब्ध होती है। उन्होंने प्रारंभिक छोटे उपन्यासों के बाद नायक चेतन को लेकर उपन्यासों की शृंखला ही खड़ी कर दी है। इन सभी उपन्यासों में चेतन को ही नायक बनाया है और सभी पात्र तथा घटनाएँ उसे घेर कर ही सार्थक होती है। अश्क जी ने जिस महागाथा की सृष्टि की है, वह उनके अपने जीवनानुभवों, अनुभूतियों पर आधारित है। कुछ ऐसा महसूस होता है कि लेखक 'चेतन' हो या 'गोविन्द' उन्हीं को माध्यम बनाकर अपनी ही जीवन गाथा लिख रहा है। 'लक्खी' ही 'चन्दा' है जो अश्क जी की प्रथम पत्नी है और 'माला' ही अश्क की दूसरी पत्नी 'माया' है। 'निमिषा' ही अश्क जी की तीसरी पत्नी 'कौशल्या' जी है। यहाँ अश्क जी ने हिन्दी उपन्यास साहित्य की प्रचलित धारा से हटकर एक नवीन औपन्यासिक जगत का निर्माण किया है। उनकी अपनी स्वयं की अनुभूतियों के साथ-साथ समकालीन जीवन के अत्यन्त सघन, सुदीर्घ एवं चमत्कारी चित्र भी प्रस्तुत हुए हैं।

प्रेरणा :

एम्. ए. करने के पश्चात मेरे वरिष्ठ दोस्तों की अनुसंधान की जिज्ञासा को देखकर मैं भी अनुसंधान की ओर आकृष्ट हुआ। और मेरे मन में निश्चय किया कि मैं भी एम्. फिल्. उपाधि के जरिए अनुसंधान करूँ।

प्राचार्य डा. व्ही. के. घाटेजी से सलाहमशवरा करके मैंने एम्. फिल्. में दाखिल होना निश्चय किया और उनके ही निर्देशन में मैंने एम्. फिल्. लघु शोध का कार्य आरंभ किया।

उ द्दे श्य :

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में उपेन्द्रनाथ अश्कजी के उपन्यास साहित्य का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। उनके साहित्य पर अनुसंधान कार्य सफलतापूर्वक हो चुका है लेकिन उनकी प्रचलित औपन्यासिक कृति 'निमिषा' उपेक्षित रह चुकी थी। प्रस्तुत कृति में शिल्प के आधार पर कहाँतक अपना स्थान बना रखती हैं, उनकी भाषा, उसका वातावरण इस रचना को कहाँतक सफल कृति की ओर ले आती है यही देखना प्रमुख उद्देश्य रहा है। तथा इस कृतिपर अनुसंधान करके हिन्दी साहित्य में उस कृति को उजागर करने का प्रयास ही मेरा दूसरा उद्देश्य रहा है।

अनुसंधान करते समय मेरे मन में निम्न प्रश्न उपस्थित थे -

१] उपेन्द्रनाथ अश्कजी का व्यक्तित्व कैसा रहा हैं ?

२] 'निमिषा' उपन्यास का वस्तुविधान कैसा रहा हैं ?

३] 'निमिषा' उपन्यास के पात्र कैसे हैं ?

४] 'निमिषा' उपन्यास में चित्रित वर्ग कौनसा हैं ?

५] 'निमिषा' उपन्यास में कौनसी समस्याएँ उभर आयी हैं ?

ऋ णा नि र्दे श :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के लेखन कार्य के समय मुझे कहीं हितचिंतकोंका सहयोग रहा है। अत: उनका अभार मानना मेरा परम कर्तव्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है -

१] ग्रंथालय - शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ।
२] ग्रंथालय - रा. छ. शाहू महाविद्यालय, कोल्हापुर।
३] ग्रंथालय - श्री स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर।
४] ग्रंथालय - दे. भ. रत्नाप्पा कुंभार कालेज आफ कामर्स, कोल्हापुर।

इन सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों के प्रति सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मैं मेरा भाग्य मानता हूँ कि मुझे श्रध्देय गुरुवर डॉ. व्ही. के. घाटे जैसे प्रतिभा संपन्न मार्गदर्शक मिले। मेरा यह प्रयास उन्हीं के सहयोग से सफल बन गया है। आपने अपना गुरुत्व मुझ पर उतना हावी कभी नही होने दिया जिससे कि मेरा वैचारिक अस्तित्व दब जाय। इन ऋणों के प्रतिपादन में आभार या धन्यवाद शब्दों से ऋण मुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। गुरु के पुनीत चरणों में नतमस्तक होने के अलावा मैं और क्या कर सकता हूँ?

मेरे गुरुवर्य डॉ. व्ही. के. मोरे सर जी के ही आशीर्वाद का फल यह लघु शोध-प्रबन्ध हैं। गुरुवर्य डॉ. मोरे सर जी की धर्म पत्नी श्रीमती मोरे जी ने भी मुझे इस कार्य के लिए प्रसन्नता के साथ प्रोत्साहित किया। उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

डॉ. पी. एस्. पाटील सर और डॉ. अर्जुन चव्हाण सर जी ने इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में विशेष सहायता तथा मार्गदर्शन किया है। उनके प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और आगे भी ऐसे ही मार्गदर्शन की कामना करता हूँ।

प्रा. सौ. एम. एस. जाधव मॅडम ने भी इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने मे सहायता तथा मार्गदर्शन किया हैं। उनके प्रति भी मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे माता-पिता, दादी, और भाई तथा बहनों के आशीर्वाद से मेरा यह कार्य सफल बना।

मेरे दोस्त अनिल साळुंखे, भारत कुचेकर और रफ़ीक बंदीवाले का मैं आभार प्रकट करता हूँ क्योंकि गुरू के बाद जीवन में दोस्त ही साथी मार्गदर्शक और गुरू का काम करता है। इस सभी का हृदय से मनपूर्वक फिर एक बार आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे दूसरे साथी श्री शंकर गुरव का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने इस शोध-प्रबन्ध के टंकलेखन में सहायता की।

अंत में इस कार्य को सफल बनाने में जिनका सहयोग मिला उन सब का आभार प्रकट करता हूँ और यह लघु शोध-प्रबन्ध विद्वानों के सामने परीक्षार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

[श्री दगडू अर्जुन जगताप]
शोध छात्र

कोल्हापुर।
दिनांक : 37/12/1997।

- अनुक्रमणिका -

		पृष्ठ क्रमांक
प्रथम अध्याय :	उपेन्द्रनाथ अश्क : व्यक्ति परिचय एवं सृजन।	01 से 26
द्वितीय अध्याय :	"निमिषा" उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन।	27 से 57
तृतीय अध्याय :	"निमिषा" उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण।	58 से 77
चतुर्थ अध्याय :	"निमिषा" उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन।	78 से 89
पंचम अध्याय :	"निमिषा" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ।	90 से 104
षष्ठ अध्याय :	"निमिषा" उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन।	105 से 132
	उपसंहार -	133 से 137
	संदर्भ ग्रंथ-सूची।	138 से 139